Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 6 | JUNE 2023

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन

डॉ. शकुन्तला देवी राणा [1]

[1] **सहायक आचार्य हिंदी, राजकीय महाविद्यालय बंगाणा, जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश - 174307**

ABSTRACT:

KEYWORDS:

भारतीय साहित्य और दर्शन संपूर्ण रूप से पर्यावरण केंद्रित रहे है ।आधुनिक काल का कोई संप्रत्यय पर्यावरण के बिना संभव ही नहीं है। भारत में यह वैदिक काल से निरंतर चल आ रहा है। उपनिषदों, पुराणों ,वेदों ,स्मृतियां सूत्र ग्रथों आदि में पर्यावरण के प्रति भरपूर चिंतन होता रहा है। हमारे वैदिक देवी देवता भी प्रकृति से संबंधित है ।वेदों में प्रकृति से संबंधित अनेक मंत्रों की रचनाये की गई है। वरुण देव, अग्नि देव हमारे ऐसे देवता है जो सीधे-सीधे पर्यावरण से संबंधित है ।हिंदी साहित्य में भी प्रकृति के प्रति प्रेम इसके प्रारंभ से ही देखा जा सकता है। प्रकृति के प्रेम के पीछे हमारी भावना रही है कि उसके प्रति संरक्षण की अनुभूति हो उसे हानि ना पहुंचाई जाए, और इस बात को साहित्य में केंद्रित करके कवियों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी के प्रत्येक काल में प्रकृति किसी न किसी रूप में उद्भासित होती रही है। आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक प्रकृति को उद्दीपन के रूप में कवियों ने अपने साहित्य में चित्रित किया है। और प्रकृति को आलंबन रूप में चित्रित करना भी उनका लक्ष्य दिखाई देता है ।आधुनिक काल में तो प्रकृति के प्रति विशेष प्रेम दिखाई देता है। छायावाद में प्रकृति संबंधी कविताओं का बाहुल्य मिलता है ।आधुनिक काल में भी प्रकृति के साथ पर्यावरण को भी काव्य का विषय बना लिया गया है। पर्यावरणीय चिंतन को आधार बनाकर हिंदी साहित्य आज भी विकसित पल्लवित और पुष्पित हो रहा है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में यह संदेश दिया था कि मनुष्य का शरीर ही प्रकृति के पांच तत्वों से बना है । जैसे –

क्षिति जल पावक गगन समीरा

पंच रचित अति अधम शरीरा[*1]

यह शरीर के भीतर की एवं बाहर की प्रकृति जब भौतिकता एवं सुविधा भोगी व्यवस्था से गिर जाती है तो विकृत होने लगती है। प्रकृति का दुरुपयोग होने से वह नष्ट होती हुई स्वयं विरोध पर आ जाती है,और विनाश का कारण बन जाती है। इस प्रकार की प्रकृति का चित्रण करते हुए जयशंकर प्रसाद ने भी कामायनी में लिखा है |

प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित हम सब भूल थे मद में ।

भोले थे ,हां तिरते केवल सब विलासिता के मद में

वे सब डूबे डूबे उनका विभव बन गया परावार।

उमड़ रहा था देव सुखों पर दुख जलधि का नाद अपार ।[*2]

आज सारा विश्व पर्यावरण की चिंता से चिंतित हो रहाहै। वह समस्या मनुष्य द्वारा स्वयं ही पैदा की गई है ।प्रकृति का दोहन और शोषण करके मानव ने अपने लिए स्वयं कब्र खोद डाली है ।प्रकृति नष्ट होकर अब मनुष्य को मनुष्य को नष्ट करने चली है। कवि लिखता है –

हेलो मनुष्य मैं आकाश हूं कल सृजन था निर्माण था आज प्रलय हूं विनाश हूं मेरी छाती में जो छेद हो गए हैं काले काले यह तुम्हारे भालों के घाव है ये कभी नहीं भरने वाले[*3]

हिंदी के कवि पर्यावरण चेतना के प्रति हमेशा से सजग दिखाई पड़ते हैं। उनकी चेतना में प्रकृति विमर्श का रूप भी उभर कर सामने आता है। सभी ने पर्यावरण संवेदना को सुरक्षित रखते हुए पर्यावरण को लेखन की प्रतीक शैली का माध्यम बनाया है। कहीं कविता में पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न चिंताएं भी झांकती दिखाई देती हैं । और कहीं-कहीं प्रकृति को प्रतीक रूप में आत्मा और परमात्मा के रूप में चिंतित चित्रित करके कवियों ने अपनी काव्य का विषय बना अपना काव्य कर्म किया है।

आज की अनेक समस्या प्राकृतिक संतुलन के बिगड़ने से पैदा हुई है । औद्योगिक और नगरीकरण की अंधी दौड़ से प्रकृति को इतना नुकसान पहुंचा है कि उसका खामियांजा हमें कई पीढियां तक भुगतना पड़ रहा है।[*4]

अनेक कवि, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेई, चंद्रकांत देवताले, किशोरी लाल व्यास, एकांत श्रीवास्तव, लीलाधर मंडलोई, शिशुपाल सिंह, निर्मल पुतुल, जितेंद्र नाथ पाठक, विनोद पदरज जैसे कई पर्यावरण विषय को अपनी कविताओं के माध्यम से उठाते रहे हैं ।

ज्ञानेंद्रपति अपनी कविताओं में पहाड़ों की अंधाधुंध कटाई पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए लिखते हैं, अब आएंगे पर्वतों के पंख काटने वह वज्रधार इंद्र के वंशज अपनी फटफटिया में भड़भड़िया में और फटाफट धड़ाधड़ चालू हो जाएंगे क्रशर बारूद की गंध फैल जाएगी हवा में उनके टूटने की गंध के ऊपर और वे बोल्डरों में गिट्टियों में खंड-खंड हो जाएंगे [*5]

विकास आज की उपलब्धि नहीं है। अनादि काल से मनुष्य विकास की ओर अग्रसर रहा है। विकास बहुत आवश्यक तो है और यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया भी है ।मानव विकास का सीधा संबंध नगरीकरण, औद्योगिकरण ,खनन ऊर्जा संसाधन आदि परियोजनाओं के निर्माण और बढ़ाव से है ।यह विकास गांव और जंगलों को नष्ट करके रख देगा। इस प्रकार का विकास ,किस प्रकार का विनाश लाता है ,यह कविअपने शब्दों में इस प्रकार समझता है ---

तुम्हारे गांव तक यह सरकार जो दो हफ्ते में पक्की सड़क बनवा रही है।

खुश मत होवो की इस पर चलेंगी गाड़ियां और तुम घंटे आधे घंटे में शहर पहुंच जाओगे और खाने के वक्त तक वापस लौट आओगे यह भी सोचो कि इसी से होकर मिनट भर में पहुंचेगी सरकारी फौज और तुम्हारा गांव रख बन जाएगा[*6]

अतिक्रमण से जंगल और पर्यावरण को बचाए रखना है। समकालीन कवि अपनी कविता में प्रकृति के असुरक्षित हालात के प्रति अपनी आवाज बुलंद करता है ।लीलाधर जगूड़ी की कविता में समय समाज तथा व्यवस्था की विसंगतियां तथा विद्रूपताओं को उभारा गया है।

वे कहते हैं-

जितनी मात्रा में मनुष्य मरता है। उतनी मात्रा में आत्मा भी मरती है। जितनी मात्रा में जीवन मरता है। उतनी मात्रा में प्रकृति भी मरती है। अपने विरोध के विरोध में[*7]

प्रकृति के साथ-साथ जल का संकट भी सबसे बड़ा संकट है। पेयजल समाप्त होने वाला है। हमारे परंपरागत जल स्रोत भी खत्म हो रहे हैं । ज्ञानेंद्रपति लिखते हैं –कि प्यास बुझाने को प्यासा प्रतीक्षा करता कुआं महीनों गहरा सा कूड़ादान है वह अब उसकी प्यास सिसकी की तरह सुनी जा सकती है

अब भी[*8] पानी के इस संकट से विश्व युद्ध तक की बात की जाती रही है। पानी के भूमिगत स्रोत सूख रहे हैं। वर्षा के पानी को संचय करने की आदत हमने खो दी है। पानी बिकने की मशीन लग गई है,कवि कहता है --

दिल्ली के एक चौराहे पर मैं उसे देखकर डर गया कि जो आकाश से बरसता है बेमोल जो नदियों में बहता है खुलेआम तो अब वो पानी भी बिकाऊ हो गया बाजार में अब तक हम अपनी भूख से लड़ते थे अब हमें अपनी प्यास से भी लड़ना होगा [*9]

स्पष्ट है जैसे-जैसे मनुष्य सभ्यताओं का विकास करता जा रहा है नई-नई समस्या खड़ी करता जा रहा है। पर्यावरण को लेकर जो संकट हमारे सामने खड़ा है उसका चिंतन हिंदी साहित्य में विविध स्तरों पर होता रहा है, होता रहेगा। हिंदी साहित्य में न केवल समस्याओं का अंकन हो रहा है बल्कि जन जागरण के द्वारा हल भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं ।कवि या साहित्यकार के द्वारा आज के हालात में भी आशा छोड़ी नहीं जा रही है ,अभी भी कवि प्रकृति के स्वरूप को बचाने के लिए काव्य के माध्यम से प्रयासरत है--

अभी कुछ बीज और कुछ पंछी बच्चे हैं मेरी जेब में और कुछ सपने भी बाकी है मेरी आंखों में अभी मेरी उंगलियों में सृजना के स्वर बोलते हैं अभी से उदास होने की जरूरत नहीं है[*10]

REFERENCES

1. तुलसीदास- रामचरितमानस, किष्किंधा कांड ,गीता प्रेस गोरखपुर, श्लोक 11, चौपाई दो
2. जयशंकर प्रसाद- कामायनी वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ दो
3. ऋषभदेव शर्मा -मै आकाश बोल रहा हूं ,ताकि सनद रहे, सागरिका पत्रिका ,पृष्ठ 52
4. डॉ वेद प्रकाश अमिताभ- समकालीन काव्य :पर्यावरण विमर्श (लेख)मधुमती फरवरी 2005 पृष्ठ 98
5. ज्ञानेंद्रपति झारखंड के पहाड़ों का अरण्य रोदन ,संशयात्मा पृष्ठ 23
6. अरुण कमल उल्टा जमाना, सबूत पृष्ठ 84
7. लीलाधर जगूड़ी- भय भी शक्ति देता है ,पृष्ठ103
8. ज्ञानेंद्रपति -प्यासाकुँआ, मई 2008 पृष्ठ 30
9. एकांत श्रीवास्तव -बीज के फूल तक ,पृष्ठ 44
10. डॉक्टर किशोरी लाल व्यास- संभावना ,जंगलों को गाने दो, पृष्ठ 47